International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समकालीन अवधी कविता की प्रवृत्तियाँ

शशांक मिश्र, स्वतंत्र अध्ययन एवं शोधकार्य
डॉ. कैलाश देवी सिंह, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर,
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोध-सारांश

आधुनिक अवधी कविता अनेक चरणों से होकर आज यहाँ तक पहुंची है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं0 प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आधुनिक अवधी कविता का प्रस्थान निर्मित किया था। बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' ने अवधी कविता को 'चकल्लस' संग्रह के द्वारा सार्थकता प्रदान की। 'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल और रमई काका की त्रयी ने जो विपुल सर्जना की, उसका प्रभाव तथा प्रताप आज तक दिखाई देता है। इस त्रयी के बाद अवधी कविता ने कुछ कदम और बढ़ाए तो उसे नई कविता का साथ मिला। परिस्थितियाँ और रूचियाँ बदलती हैं तो अभिव्यक्ति का बदलना स्वाभाविक है। आद्या प्रसाद 'उन्मक्त', त्रिलोचन शास्त्री, ब्रजेन्द्र मिश्र, लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', लवकुश दीक्षित, श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप', सत्यधर शुक्ल, पारस भ्रमर, श्रीश, क्षेम, विकल गोण्डवी, अरूण त्रिवेदी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, दिवाकर अग्निहोत्री, ओंकारनाथ उपाध्याय आदि की रचनाओं से परिवर्तित अभिव्यक्तियों का पता चलता है।

की-वर्ड –अवधी, कवि, अवध, लोक-कविता, अवधी काव्य प्रवृत्ति,पं0 रूपनारायण त्रिपाठी,'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल और रमई काका

परिचय-

किसी बहुत बड़े कवि ने अवधी की प्रशस्ति में कहा है-

जो दूब तना हरियाय, वहै है अवधी

कोइलरि जात कुहकति जाय, वहै है अवधी

पदमावत जेहिकी सांस-सांस माँ गूँजें

जेहिमा मानस लहराय, वहै है अवधी।।

आधुनिक अवधी कविता अनेक चरणों से होकर आज यहाँ तक पहुंची है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं0 प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन और महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आधुनिक अवधी कविता का प्रस्थान निर्मित किया था। बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' ने अवधी कविता को 'चकल्लस' संग्रह के द्वारा सार्थकता प्रदान की। 'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल और रमई काका की त्रयी ने जो विपुल सर्जना की, उसका प्रभाव तथा प्रताप आज तक दिखाई देता है। इस त्रयी के बाद अवधी कविता ने कुछ कदम और बढ़ाए तो उसे नई कविता का साथ मिला। परिस्थितियाँ और रूचियाँ बदलती हैं तो अभिव्यक्ति का बदलना स्वाभाविक है। आद्या प्रसाद 'उन्मक्त', त्रिलोचन शास्त्री, ब्रजेन्द्र मिश्र, लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र', लवकुश दीक्षित, श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप', सत्यधर शुक्ल, पारस भ्रमर, श्रीश, क्षेम, विकल गोण्डवी,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अरूण त्रिवेदी, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, दिवाकर अग्निहोत्री, ओंकारनाथ उपाध्याय आदि की रचनाओं से परिवर्तित अभिव्यक्तियों का पता चलता है। पं0 रूपनारायण त्रिपाठी गंगा जी से जो 'आरज' करते हैं, उसके व्यापक अर्थ हैं-

देहियाँ कै दियना, परनवा कै बाती

झिलमिल झिलमिल बरै सारी राती,

तबहूँ न कटै अन्हियार हो गंगा जी।।

जनवादी चेतना-

वस्तुतः यहीं से समकालीन अवधी काव्य की भूमिका प्रारंभ होती है। यह सत्य है कि पढ़ीस की छायावादी और प्रगतिवादी चेतना, वंशीधर शुक्ल की जनवादी काव्य दृष्टि और रमई काका की व्यंग्य विनोदात्मक शैली परिवर्तन की माँग कर रहीं थी। परिवर्तन अर्थात कविता का समकालीनता से सघन संपर्क, सम्पर्क का तात्पर्य यह कि 'अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है?' से निकल कर ठोस यथार्थ पर कविता को खड़ा करना।

गाँव और प्रकृति के बीच पसरते सन्नाटे को पारस भ्रमर व्यक्त करते हैं-

सूनी है पुरई औ सूने हैं पुरवा

सूनी देहरिया है सूने दुअरवा।

सूने ओसरवा सिवाने

कहाँ गई निंबिया जवनि।।

सामाजिक-राजनीतिक चेतना -

'समकालीन अवधी कविता की यात्रा में एक रेखांकित करने योग्य मोड़ तब आता है जब रामकृष्ण सन्तोष, जगदीश पीयूष, रामबहादुर मिश्र, सुशील सिद्धार्थ, भारतेन्दु मिश्र, विद्या बिन्दु सिंह जैसे व्यक्तित्व अपनी बहुमुखी प्रतिभा के साथ अवधी की सेवा में सक्रिय होते हैं। संगठन, प्रकाशन रचना और आलोचना में एक साथ सक्रिय होकर इन्होंने सचमुच युगान्तर प्रस्तुत किया। जगदीश पीयूष की अवधी कविता पुस्तक 'अँधरे के हाथ बटेर' में राजनैतिक, सामाजिक चेतना की अनेक श्रेष्ठ कविताएँ मौजूद हैं। वे कम शब्दों में बड़ी बात कहते हैं-

पिया गए परदेस, आवा कल्हियाँ सनेस,

घर भेजै काव, तनिकौ कमाई नाहीं बा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हमका रामौ जी के घरे सुनवाई नाहीं बा।

डॉ. रामबहादुर मिश्र श्रेष्ठ संगठनकर्ता, सम्पादक, शोधकर्ता और रचनाकार हैं, इनकी रचनाओं में प्रायः सामाजिक संकटों की आहट सुनाई पड़ती है। जैसे-

'गाँव की गल्ली दिल्ली तैने

अधिरत्ता बतलाय

रहा है देसु कहाँ का जाय।।

टोपी थैली हाथु मिलावै, तइकै हँसै ठठाय

रहा है देसु कहाँ का जाय।।

समकालीन कविता में डॉ. सुशील सिद्धार्थ का एक विशिष्ट स्थान है। आज वे हमारे बीच नहीं हैं किन्तु अपनी रचनात्मकता से वे साहित्य जगत में सदैव बने रहेंगे। प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित जी ने उनके लिए कहा था- सुशील सिद्धार्थ की कविताओं में नए काल्पान्तर का प्रथम स्वर है। .... इनमें नए जीवन बोध के समकालीन सूत्र सुरक्षित हैं। डॉ. सिद्धार्थ ने पदगीत, गजल, दोहा, नवगीत, आल्हा आदि में लिखते हुए अपने समय के जटिल यथार्थ को व्यक्त किया है। दलित विमर्श पर लिखते हुए उन्होंने किसान आन्दोलन के नायक मदारी पासी और अम्बेडकर को केन्द्र में रखा है। एक नवगीत में वे बाजारवाद की खबर देते हैं-

साधो अब ना जाब बजारै।

रूपया का दानव घूमि-घूमि कै लवागन का ललकारै

ख्यात हजम कै बनै बिल्डिंगै रूपयन की जयकारै।

पूँजीपति सुखग्घी ख्यालैं को जीतै को हारै।।

समकालीन अवधी कविता की एक सर्वोपरि विशेषतः यह है कि इसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ सक्रिय हैं। इससे पीढ़ी अन्तराल तो समाप्त ही हुआ है, परम्परा और आधुनिकता को समेकित करने में भी सुगमता हुई है। साहित्य प्रायः विकास के प्रारूप पर भी टिप्पणी करता है। अवधी कविता में यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। डॉ. विद्याबिन्दु सिंह कहती हैं-

गउवाँ गिरउवाँ सहर भए बाबा

सहर भए बाबा, जहर भए बाबा।।

इस तुलना में वह सारा यथार्थ घूम जाता है जो आज हमारे आस-पास है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समकालीन अवधी कविता जिस जीवन में साँस ले रही है वह जीवन उपभोक्तानम के भयावह आक्रमण से हैरान परेशान हैं वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर विश्वमानवता को नए संपर्क सेतु दिए हैं वहीं उसके अनिवार्य कुप्रभावों ने गाँव प्रकृति और सहज जीवन पद्वति को भाँति-भाँति से क्षति पहुंचाई है। इसका प्रतिकार भी अवधी कविता में हुआ है।

'अमरीकी बादर से बरसै तेजकी बउछार'- जैसी पंक्तियाँ एक प्रखर राजनैतिक चेतना से लैस हैं। यद्यपि अवधी कविता गाव और किसान के संघर्ष को प्रारंभ से स्वर देती रही है, तथापि नए समय में इसकी गहराई और बढ़ जाती है। सतीश आर्या के ये शब्द कितने मार्मिक हैं-

रोज-रोज रिनकै मरोर कै सपनवा।

जहाँ-तहाँ दिन कटै आन के अँगनवा।।

कबहुँ जो मिलै अनुदान सरकारी।

बिचवै मा गुटक लेय अधिकारी।।

अँखिया से टप-टप चुवै हर बेरिया बदरिया होना।।

मनुष्य जिस तरह से बढ़ती आपाधापी के बीच अपनी पहचान, सुख-शान्ति नैतिकता, जीवन मूल्य सब खोता जा रहा है। उस पर अनेक अवधी कवियों ने कविताएं रची हैं। इनमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विसंगतियों, विडम्बनाओं का चित्रण है। कारणों की ओर संकेत है और कष्टों को रेखांकित करने का प्रयास है। किन्तु वह कविता ही क्या जो हताशा के बीच आशा की किरण न जगा दे क्योंकि कोरा यथार्थ चित्रण जीवन को कोई संदेश नहीं देता, परिवर्तन की ललक नहीं तैयार करता, अंधकार से जूझने का संकल्प नहीं जगाता। द्वारिका प्रसाद त्रिपाठी 'ब्रजनाथ' जैसे अनेक कवि अपना समस्वत संकल्प व्यक्त कर प्रतिरोध को नई पहचान देते हैं। ब्रजनाथ का गीत 'जाए चला दियना' इस दृष्टि से पर्याप्त महत्वपूर्ण है। वे कहते हैं-

कभी घटा अंधियारी डगरिया।

राह चलत पग लागै कंकरिया।

उठाए चला दियना रात अंधियरिया।

जराए चला दियना रात अंधियरिया।।

यह बड़ी बात है कि समकालीन अवधी कविता में माटी या धरती के स्वर सुरक्षित हैं। कभी रमई काका ने कहा था' 'हमरे दादा का खेतु आय हमका कैसेने पिराय होय।' आज स्पेशल इकोनामिक जोन के बढ़ते हस्तक्षेप पर सुशील सिद्धार्थ चेतावनी देते हैं-

या धरती उनकी नाय, जौन तौलति रूपयन माँ धरती।

या धरती उनकी आय, नसै जिनकी साँसन माँ धरती।।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इधर बहुत सारे कवियों ने गाँवों में बढ़ रही विवादी राजनीति को अपना विषय बनाया है। यह सत्य है कि अनेक कारणों से लोकतंत्र की वास्तविक परिभाषा से गाँवों का परिचय कुछ अटपटा सा है। पंच और प्रधान जैसे शब्दों में जो नैतिक अर्थ भरा है, वह गाँव की धरती पर उतर नहीं पा रहा है। डॉ. भारतेन्दु मिश्र लिखते हैं-

तुम परधान सबै विधि लायक, तुमरे घर आवै अफसर।

तुम पर किरपा करैं विधायक, हम भुक्खड नंगे नालायक।।

गाँवों से पलायन हो रहा है। वहाँ जातिवाद, परिवारवाद और लिप्सा ने भयावह रूप ले लिया है। अर्थतंत्र इतना जटिल होता जा रहा है कि सीधे-सादे सरल व्यक्ति का जीवन यापन भी कठिन होता जा रहा है। इसी संदर्भ में सुशील सिद्धार्थ का प्रगतिवादी गीत भी दृष्टव्य है-

बागन-बागन कहै जिडिया, होई जाये होसियार

जमाना जालिम है।

प्राकृतिक चेतना-

वस्तुतः अवधी कविता जिस जीवन का प्रतिनिधित्व कर रही है, उसमें उसके तरह के परिवर्तन उपस्थित हैं। इनके कारण इनका कथ्य भी बदला है। पर्यावरण की समस्या विकराल रूप लेती जा रही है। जिस प्रकार गाँव और ज्वार में प्रकृति के साथ अत्याचार हो रहा है। उसका दुष्परिणाम दिखाई दे रहा है। पंचतत्वों का मूल स्वभाव जैसे बदलता जा रहा है। स्वच्छ हवा, स्वच्छ पानी, उपजाऊ धरती इनके बारे में सोचकर चिन्ता होना स्वाभाविक है।

भगवती प्रसाद अग्निहोत्री 'पेड़ कटान का दुख' व्यक्त करते हैं-

अर्राइ गिरइ नींबी औ आँव कै बिरवा।

मनई कै बुद्धी चाटिसि लालच कै किरवा।

बागन की छाँह हेरानि, कहाँ टबका पइहौं।

अइसै जो बिरवा कटे, तूमहू मरि जइहौं।।

युवा कवि आग्नेय पानी पर छाए संकट को कई रचनाओं में व्यक्त कर चुके हैं एक गीत में वे कहते हैं-

को ले जीवन केरि बलैया, चारिउ वर हावा दैया।

सूखे नद्दी ताल तलैया, अब को है इनका बचवैया।।

निष्कर्ष-

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 02, February- 2021
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अवधी कविता में समर्थ कवियों की गौरवपूर्ण उपस्थित के साथ समकालीन परिदृश्य के कुछ अन्य महत्वपूर्ण कवियों का मैं उल्लेख करना चाहूँगा। वे हैं- फारूख सरल, लक्ष्मीप्रसाद 'प्रकाश', उमेशदत्त श्रीवास्तव 'सुमन', मदनमोहन पाण्डेय 'मनोज', आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' आदित्य वर्मा, नन्हें भैया, जुमई खाँ 'आजाद', मधुरेश, रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी, प्रलयंकर, डॉ. राधा पाण्डेय, सुरेश बहादुर शुक्ल, श्याम नारायरण अग्रवाल 'विटप', गीता श्रीवास्तव और सच्चिादानंद तिवारी 'शलभ' इत्यादि। स्पष्ट है कि यह सूची और भी लम्बी है फिर भी इससे समकालीन अवधी कविता की बहुमुखी सम्पन्नता का संक्षिप्त परिचय तो मिलता ही है।

संदर्भ –

1. अवधी और उसका साहित्य, त्रिलोकी नारायण दीक्षित, सं0-क्षेमचन्द्र 'सुमन', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1954
2. अवधी साहित्य: सर्वेक्षण और समीक्षा, सं0 जगदीश पीयूष, लोक साहित्य संस्थान, इलाहाबाद, 1978ई0
3. अवध-अवधी विविध आयाम, सं0-डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, अवधी साहित्य संस्थान, फैजाबाद, 1994
4. अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर, सं0-डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, अवधी साहित्य संस्थान, फैजाबाद,1993
5. समकालीन अवधी कविता, सं0 डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी, सं0 डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, अवधी साहित्य संस्थान, फैजाबाद, 1994
6. अवधी भाषा एवं साहित्य का इतिहास, राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, भवदीय प्रकाशन, फैजाबाद, 1993
7. अवधी भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, ज्ञानशंकर पाण्डेय, मीरा प्रकाशन, 1989
8. पढ़ीस ग्रन्थावली, सं0 रामविलास शर्मा, उ0प्र0हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1998
9. आधुनिक हिंदी कविता (प्रतिनिधि चयन: 1850 से अब तक), अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000 (पेपर बैक)
10. अवधी साहित्य की भूमिका, डॉ. त्रिभुवन नाथ शुक्ला, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2003
11. अवध ज्योति (पत्रिका), सं0 डॉ. रामबहादुर मिश्र, अवध भारती संस्थापक, नरौली, बीजापुर (हैदरगढ) बाराबंकी
12. अवधी ग्रन्थावली (खण्ड 1), सम्पादक जगदीश पीयूष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008
13. अवधी ग्रन्थावली (खण्ड 5), सम्पादक जगदीश पीयूष, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
14. अवधी काव्यधारा, श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप', सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, 2002
15. लोक साहित्य की भूमिका- डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
16. हिन्दी साहित्य कोश, प्रधान सं0- धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञानमण्डल लि0, बनारस, 2015
17. लोक साहित्य-विधाएं एवं दिशाएं, डॉ. कैलाशचन्द्र अग्रवाल, चिन्मय प्रकाशन, आगरा, 1986
18. लोक साहित्य विज्ञान, डॉ. सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं0, आगरा, 1971
19. हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास (प्रथम भाग), सं0-डॉ. राजबली पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् 2017
20. अवधी लोकगीत विरासत, डॉ. विद्याविन्दु सिंह, ज्ञान विज्ञान एजुकेयर, नई दिल्ली, 2016
21. बुन्देलखण्ड में साहित्य की परम्परा (भाग-2), प्रधान सं0- प्रो0 सुरेन्द्र दुबे, साक्षी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2016
22. अवध के अल्हैत (विभिन्न सर्वेक्षण प्रपत्र)